विनोद कुमार शुक्ल

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़! (XI)

सोमवार को चाँदनी रात थी। बच्चे इसके पहले रात को स्कूल नहीं आए थे। रात को स्कूल कैसा दिखता है यह उनको मालूम नहीं था। बच्चे आने को थे। उनकी तैयारी चल रही होगी। वे तैयार हो चुके होंगे। पर मामा, नाना लोग तैयार हो रहे होंगे। किसी की गुड़िया सज रही होगी। नए कपड़ों की कतरनों से उन्हें सजाया जा रहा होगा। माँ को कंघी करता देख बोलू को अम्मा की याद हो आई। वह अम्मा के घर भागने ही वाला था। वह कुछ कहता इसके पहले माँ ने उसे पकड़ लिया, "ला, कंघी कर दूँ।" माँ उसकी कंघी करने लगी। घुँघराले बाल होने के कारण माँ धीरे-धीरे कंघी कर रही थी। माँ की पकड़ जैसी ही ढीली हुई "मैं अम्मा के पास जा रहा हूँ।" कहता हुआ वह भाग खड़ा हुआ। "मैं अम्मा से कंघी करवा लूँगा।" बार-बार कहता हुआ वह भागा जा रहा था।

बस्ती में चन्द्रमा निकल आया था। लगता है कि यह स्कूल में निकला चन्द्रमा था। जो उत्सुकता वश बस्ती में आ गया था कि क्या कारण है कि बच्चे अभी तक स्कूल नहीं पहुँचे। या हो सकता है कि पहले बस्ती में आया हो कि बस्ती के साथ स्कूल जाएँगे। चन्द्रमा के आ जाने से बस्ती में त्यौहार का उजाला हो गया हो गया था कि चन्द्रमा निकल गया देर हो रही है। हरी घास की छप्पर की घास के घने के बीच से चन्द्रमा निकला था। इसलिए उसका प्रकाश घास की ओर से भीगा था। हवा में ओस की ठण्डक थी। पारदर्शी गीले प्रकाश में चलती हवा इसका कारण हो। घरों में बच्चों का अधिक कोलाहल था। अभी अगर कोई भटक कर बाहर से आ जाए तो उसे लगेगा कि वह बच्चों की बस्ती में आ गया है। वह एक घर का दरवाज़ा खटखटाएगा तो गुड़िया जैसी सजी लड़की दरवाज़ा खोलेगी। दूसरे घर का दरवाज़ा खटखटाएगा तो गुड्डे जैसा सजा लड़का दरवाज़ा खोलेगा। "क्या आप भटक कर आए हैं?" वह पूछेगा। तो उसे लगेगा कि वह बड़ा है इसलिए भटका हुआ लग रहा है। बच्चा होता तो भटका हुआ नहीं लगता।

अब आभास होने लगा था कि घरों से बच्चे निकलने ही वाले हैं। घरों में झाँकने चन्द्रमा उचककर थोड़ा ऊपर हो गया था। हवा शान्त हो गई थी। शान्त हो गई थी यानी हवा ठहर गई थी कि ठहरे हुए वह घरों से बच्चों का निकलना देखे। हवा के ठहरने के बाद भी पेड़ हिल रहे थे। पत्तियों में हरहराहट थी। पेड़ों का हिलना बच्चों के पास जाने की उनकी इच्छा थी। अगर कहावत में जाएँ या न भी जाएँ, पेड़ इतने उत्सुक थे कि अपने आप में डाल-डाल और पात-पात हो रहे थे।

पहला बच्चा जब स्कूल जाने के लिए अपनी माँ के साथ घर से बाहर निकला तो ऐसा दिखा जैसा खिलने पर फूल दिखता है। उसने अपनी माँ से कहा, "सब चले गए।" उसकी माँ को भी लगा कि हो सकता है। ठीक उसी वक्त सब घरों से बच्चे एक साथ बाहर आए और एक साथ कहा, "हम आ गए।" फिर गलियों, रास्तों में फूलों की क्यारियाँ-सी हो गईं। एक मेला लगने के लिए रात में स्कूल जा रहा था। बच्चों के साथ परिवार के लोग थे। सयाने लोग भी थे। बस्ती के बूढ़े और बूढ़ी भी थे। इनके साथ-साथ चन्द्रमा प्रकाश दिखाता हुआ जा रहा था। बोलू को लगता कि चन्द्रमा उसके साथ जा रहा है। कूना को लगता कि केवल उसके साथ है। कूना एक छोटे-से घोड़े पर सवार थी। इतना छोटा भी नहीं कि खुद घोड़े पर सवार हो गई हो। उसे बैठाया गया था। सब लोग कूना और बोलू की तरह चन्द्रमा के साथ चलने को जान रहे थे। क्योंकि चन्द्रमा सबके साथ था। जैसे अलग-अलग साथ था। किसी से छूटा नहीं था।

बोलू गुनगुना रहा था। एक मधुर गूँज चन्द्रमा के प्रकाश की तरह चारों तरफ फैली थी। जंगल और बस्ती के पेड़ों की मिलीजुली सर-सर और दिनों की तरह सन्नाटे को नहीं बढ़ा रही थी। बल्कि सन्नाटे को तोड़ते हुए उस मधुर गूँज के संग थी। इस भीड़ में कुछ गाय-बैल भी थे। उनके गले की घण्टियों की टुनटुन भी थी।

इतने में स्कूल की घण्टी आठ बार बजी। इस तरह बजी कि बच्चों को लगा बहुत देर हो गई है। देर तो हो गई थी। बहुत से बच्चे तो अभी तक सो गए होते। परन्तु स्कूल में सोएँगे के उत्साह में सब चैतन्य थे। साढ़े छह-सात बजे तक स्कूल पहुँच जाते तो अच्छा था। बड़ों ने कहा, जल्दी चलो देर हो रही है। तो कुछ बच्चे दौड़ने लगे। कूना का घोड़ा बोलू के पास पहुँचा ही था कि कूना ने चिल्लाकर कहा, "बोलू देर हो रही है। मेरे घोड़े पर बैठ जा।" बोलू, ने कहा, "नहीं मैं अपने घोड़े से आऊँगा।" कूना ने पूछा, "तुम्हारा घोड़ा कहाँ है?" कूना का घोड़ा दौड़ने के लिए तैयार था। वह तेज़ चलने लगा। फिर दौड़ने लगा।

बोलू गुनगुनाता हुआ बहुत हल्का हो गया था। बोलू ने अपने बाएँ और दाहिने कन्धे में हवा के झोंकों के पंखों को महसूस किया। हवा के पंख लगते ही आकाश उसे लिखा हुआ एक संसार लगा और इस लिखे हुए संसार में "स" के ऊपर लगी बिंदु चन्द्रमा है। उसकी इच्छा चन्द्रमा तक उड़ जाने की हुई। उसे स्कूल जाने की याद आई। दो झोंकों में वह कूना तक पहुँच गया। कूना का घोड़ा खटपट दौड़ रहा था। बोलू हवा के घोड़े पर सवार था। और वह कूना के पास आने लगा। पीछे से उसने बहुत धीरे-से पुकारा, "कूना।" कूना पीछे देख पाती कि बोलू उसके पास से गुज़रा और आगे निकल गया। "मैं आगे स्कूल पहुँचूँगा।" बोलू ने कहा। कूना अचम्भित थी। जैसे यह एक बड़ा जादू था। कूना का घोड़ा भी अचम्भित था। वह ठिठकने लगा था। कूना ने अपने छोटे-छोटे पैरों से एड़ लगाई। कूना ने कहा, "बोलू, मैं तुम्हारे घोड़े पर बैठूँगी। तुम्हारा घोड़ा अच्छा है। नहीं तो मुझको आगे जाने दो।"

"दोनों साथ चलेंगे।" बोलू ने कहा। "तो मैं तुम्हारे घोड़े पर आ जाऊँ?" कूना ने कहा। "मेरा घोड़ा शायद तुम्हारा वज़न न उठा पाए।" बोलू ने कहा।

"तुम्हारा घोड़ा भूखा है?" कूना ने पूछा।

"तुम मोटी हो। दोनों का भार मेरा घोड़ा उठा नहीं पाएगा।"

"अच्छा, मेरा हाथ पकड़ो।" बोलू ने कहा। उसने कूना की ओर दाहिना हाथ बढ़ाया। कूना ने बोलू का हाथ पकड़ा। बोलू कूना के घोड़े से कुछ दूर हुआ। और कूना बोलू का हाथ पकड़े घोड़े से अलग होकर कुछ दूर तक उड़ी। कूना के भार से बोलू झुक गया था। बोलू कूना के घोड़े जितनी ऊँचाई पर था। कूना का पैर धरती के बिलकुल पास था। सामने एक चट्टान थी। कूना ने अपने दोनों पैर ऊपर मोड़ लिए थे कि चट्टान से ना टकराएँ। बोलू इसको जान रहा था। चट्टान

से वह कुछ दूर हट गया। सामने बहुत से पेड़ थे। बोलू गुनगुनाता हुआ अधिक हल्का होने की कोशिश करता पर वह इतना हल्का नहीं हो पा रहा था कि कूना को लिए पेड़ों के ऊपर चला जाता। इसलिए ज़मीन पर उतरने के लिए बोलू चुप होकर गुनगुनाने को बीच-बीच में बन्द कर देता। इससे बोलू थोड़ा-थोड़ा भारी हुआ और उसके साथ कूना के पैर धरती पर लगे। कूना का घोड़ा आगे कहीं निकल गया था। नीचे उतरते ही कूना को अपना घोड़ा याद आया। घोड़े के कारण वह भूल गई कि थोड़ी देर पहले वह उड़ रही थी।

स्कूल पास आ गया। वे स्कूल के मैदान के छोर पर खड़े थे। स्कूल में एक शान्त चहल-पहल थी। सब खिड़की-दरवाज़े खुले थे। सभी गुरूजी होंगे। कक्षा के अन्दर फीका उजाला था कि किताब पढ़ना चाहें तो भी न पढ़ सकें। वैसे भी पाठ्य-पुस्तक नहीं पढ़ना था।

चन्द्रमा आकाश में बल्ब की तरह जल रहा था। चन्द्रमा को फ्ल्ड लाइट कहना ठीक था। वातावरण खेल की रात जैसा था। छुट्टी के दिन की सुबह कल होगी उसकी यह रात थी। स्कूल के बच्चों के साथ उनका घर-परिवार भी स्कूल पहुँचने वाला था। कुछ बच्चों की बातचीत पास आती सुनाई दे रही थी। ऐसा तो नहीं, छोटू हो। चार साथियों की आवाज़ में अकेले बातचीत करता हुआ आ रहा हो। छोटू अगर बजरंग महराज की आवाज़ में बोले तो जंगल से शेर के दहाड़ने की आवाज़ आएगी? सभी छोटू की आवाज़ से धोखा खा जाएँ ऐसा हो नहीं सकता था। शेर धोखा न खाए।

आकाश तारों से भरा था। हो सकता है कि सितारे रात को स्कूल में पढ़ने आते हों। आज बच्चे रात को आ रहे हैं इसलिए स्कूल खाली कर आकाश में भर गए हों। सितारे बच्चों के सवाल थे? ये सवाल उनके मन में उठते थे पर किसी से पूछे नहीं गए थे। शायद न पूछने से तारे बन कर चमक रहे हों कि हमारी ओर ध्यान दो और हमें बच्चों के मन में उत्तर बना दो। हमें हल कर दो। हम अनगिनित शेष हैं। तारों भरी चाँदनी होने से रात लम्बे-चौड़े प्रश्न पत्र की तरह थी।

स्कूल जाने वालों की भीड़ में भैरा भी था। भैरा बोलू को ढूँढ रहा था। इसलिए कभी बाएँ जाता, कभी पीछे, कभी दाएँ। बोलू को ढूँढने के चक्कर में वह भीड़ से अलग होकर अकेला हो गया था। वह अपने किसी भी साथी को ढूँढ नहीं पा रहा था। चाँदनी रात थी पर कोने-कोने में अँधेरे तब भी थे। रात सब तरफ के अँधेरों को भगा नहीं सकती।

भैरा के हाथों में उसका बिस्तर था। भीड़ इतनी नहीं थी कि किसी को ढूँढ नहीं पाएँ। एक तो, इधर-उधर सब बिखरे हुए चल रहे थे और पहचान में तभी आते जब पास आते। तभी भैरा को अपनी आवाज़ सुनाई दी, "बोलू, कूना स्कूल नहीं जाएगी ना।" अगर बोलू दिखता और उसके साथ कूना नहीं होती तो वह बोलू से यही प्रश्न पूछता। परन्तु भैरा तो चुप था। जब चुप था तो उसे अपनी आवाज़ क्यों सुनाई दी? बोलू उसे कब से नहीं मिला था।

जारी...